य एषु सुप्तेषु जागर्ति
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
अष्टमी संवत् 2072
मूल्य ₹4.00 . पृष्ठ 26
छोटू-मोटू (ऐच्छिक) ₹4.00

राजस्थान पत्रिका

जोधपुर, बुधवार
16 मार्च 2016
rajasthanpatrika.com
patrika.com
परिवार

गेल पर दबाव नहीं- सैमी...18

अनुसंधान यह है थ्री डी होलोग्राफिक मोबाइल तकनीक, जो अगले साल होगी बाजार में

सामने प्रकट हो जाएगा मोबाइल पर बात करने वाला

राजस्थान पत्रिका
एक्सक्लूसिव

जोधपुर @ पत्रिका
rajasthanpatrika.com/city

सोचिए, आपको कॉल करने वाला कॉलर मोबाइल की स्क्रीन में से बाहर निकलकर आपसे बात करने लग जाए तो कैसा लगेगा। यह कपोल कल्पना नहीं है। हो सकता है अगले साल इस तरह का मोबाइल आप ही के हाथ में हो। यह सपना सच होगा थ्री डी होलोग्राफिक तकनीक से, जिसपर काम करने में सैमसंग, एप्पल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनियां जुटी हुई हैं। थ्री डी होलोग्राम तकनीक त्रिविमिय तकनीक है, जिसमें लेजर बीम से विशेष तरंगदैर्ध्य का प्रकाश निकलता है

जो किसी छवि की तीन दिशाएं उभारता है। इसमें ऐसा लगता है जैसे कोई चित्र सामने ही है अथवा फिल्म के दृश्य सामने ही घटित हो रहे हैं। यह एक आभासी (वर्चुअल) तकनीक है। मोबाइल में इस तकनीक के लिए अतिरिक्त कैमरे और लेजर सोर्स लगाने पड़ेंगे। जैसे ही कॉल आएगी, लेजर लाइट्स कॉलर की फोटो को स्क्रीन से ऊपर उठा देगी। इससे ऐसा लगेगा जैसे कॉलर सामने ही बैठा है।

सैमसंग और एप्पल का आ सकता है मोबाइल

वर्तमान में सैमसंग और एप्पल मोबाइल कम्पनियां थ्री डी होलोग्राफिक तकनीक विकसित करने के लिए सबसे आगे चल रही हैं। अगले साल तक बेसिक थ्री डी होलोग्राम युक्त मोबाइल बाजार में आने की संभावना है। वैज्ञानिकों के अनुसार 2020 तक 5 जी तकनीक आएगी। उस समय आने वाले लगभग सभी मोबाइल थ्री डी होलोग्राम तकनीक युक्त होंगे। थ्री डी होलोग्राम तकनीक का बाजार हर साल 13 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। इस तकनीक का उपयोग मोबाइल के बाद स्वास्थ्य, कला और भवन निर्माण क्षेत्र में होगा। घरों व दफ्तरों के नक्शे की भी थ्री डी इमेज बनेगी।

अभी थोड़ी दिक्कत है धुएं की

लेजर किरणों की मदद से थ्री डी छवि उकेरने में कामयाबी तो मिल गई, लेकिन लेजर किरणों से यह छवि अंधेरे और धुएं में ही प्राप्त हो रही है। इस समस्या को दूर करते ही ऐसा मोबाइल बाजार में आ जाएगा। कई कम्पनियां इस पर काम भी कर रही हैं।

प्रो. मधुकर चंद्रा, केमिट्ज यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी

(इंटरनेशनल सेंटर फॉर रेडियो साइंस की ओर से आयोजित रेडियो साइंस कार्यशाला में भाग लेने जोधपुर आए हैं।)